राज कामिक्स विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 95

कालकूट

भोकाल

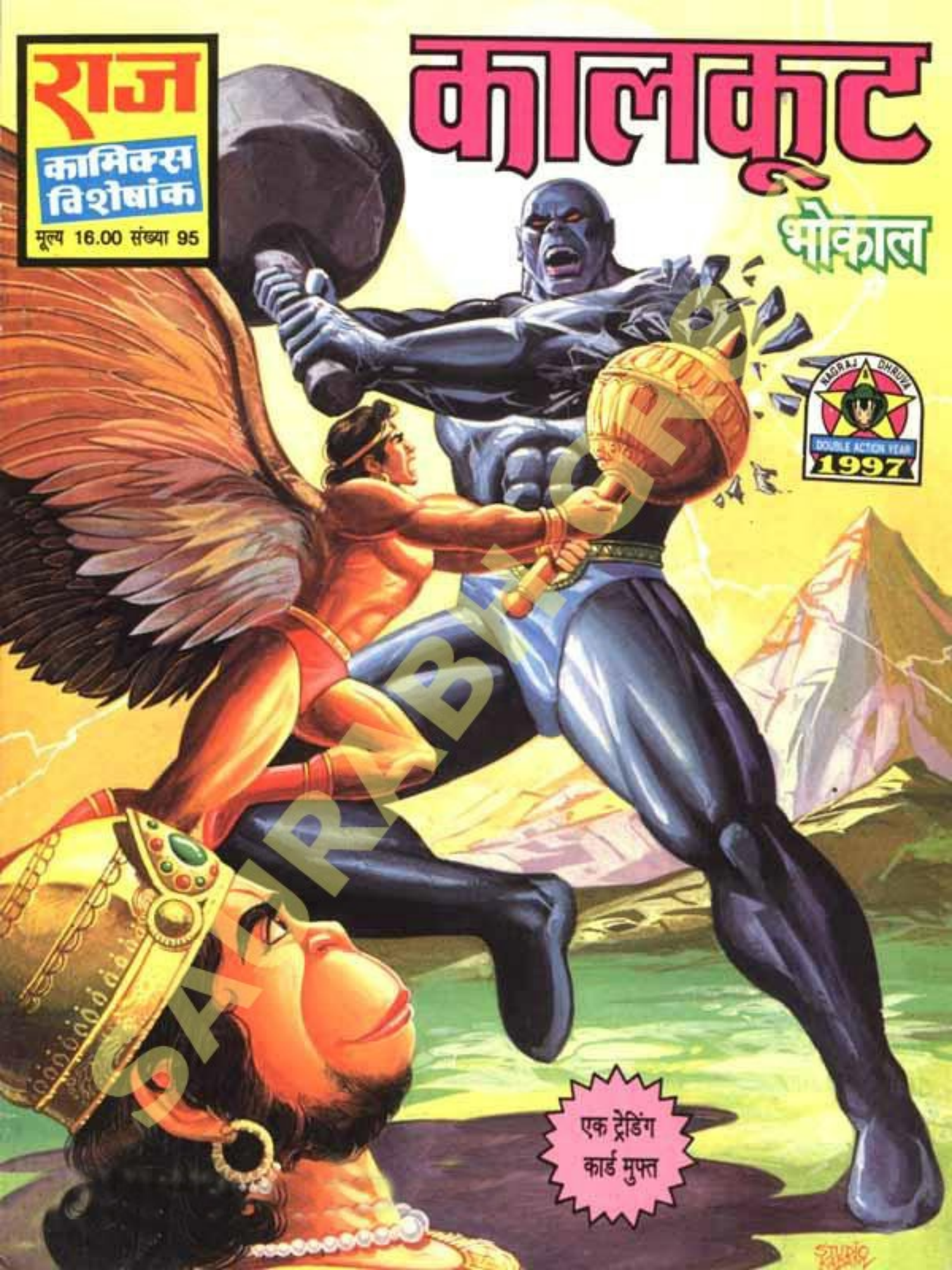

कालकूट

भोकाल

- लेखक : संजय गुप्ता.
- सम्पादक : मनीष गुप्ता.
- चित्रांकन : दिलीप कदम.

पृथ्वी, जिस पर मौजूद प्राणी जगत में सबसे श्रेष्ठ है मनुष्य। लेकिन करोड़ों की जनसंख्या में मौजूद मनुष्यों में कोई एकाध मनुष्य श्रेष्ठ होता है। और वो श्रेष्ठ बनता है अपने अद्‌म्य साहस, विलक्षण बुद्धि, उत्कृष्ट कार्यकुशलता और अपने उत्तम व्यवहार से-

हमें प्रसन्नता है कि दिव्यास्त्र सौंपने के लिए हमने एक उचित मनुष्य का चुनाव किया!

और ये सभी गुण भोकाल में कूट-कूटकर भरे हुए हैं। उसने अपनी अद्‌भुत क्षमताओं की मदद से स्वयं को श्रेष्ठ मनुष्य सिद्ध करा इसलिए देवताओं ने उसे सौंपे हैं...

...दिव्यास्त्र।

दिव्यास्त्रों की मदद से यह अवश्य ही पृथ्वी को पाप के अवतार से मुक्ति दिलायेगा!

इसकी सफलता निश्चित है हम सबका आशीर्वाद इसके साथ है।

भोकाल नाम की अपनी जिस उपलब्धि पर जहां देवता प्रसन्न थे...

...यहीं कहीं क्रोध का तूफान उठ खड़ा हुआ था-
गड़ गड़
और वो तूफान उठा था उस पर्वत के जागने से-
जो वास्तव में कालकूट नामक राक्षस के विशालकाय पर्वताकार शरीर का ही एक अंग था-
गड़ड़
फट पड़ा कालकूट के क्रोध का ज्वालामुखी-
किसने... किसने मेरी तपस्या भंग की!...
...किसने मुझे तपनिद्रा से जगाया...
मेरी काली शक्तियो, आओ।
मेरे पास आओ मेरी शक्तियों और बताओ मुझे किसके प्रताप से डोल उठा है मेरी अतिमहत्त्वपूर्ण तपस्या का सिंहासन?

अगले ही क्षण तेज चीख-पुकारों और अन्य हृदयविदारक तरह की डरावनी आवाजों से वातावरण गूंज उठा–
आह!
ईईईsss
आऽऽsss

कुछ ही क्षणों में स्थकदम पहले जैसी ही शान्ति छा गई–
और वह शान्ति इस बात की द्योतक थी कि कालकूट की काली शैतानी शक्तियां उसके पास पहुंच गई थीं–

उसकी गर्जन से तुरन्त ही हवा में एक गोल दर्पण प्रकट हुआ और उसमें नजर आया–
भोकाल! यह तो भोकाल है!
निश्चय ही इसका उद्देश्य मुझ तक पहुंचना और मुझे समाप्त करने का प्रयास करना है...

...तभी मेरी तपस्या भंग हुई। तभी मेरी तपनिद्रा टूटी...
...लेकिन भोकाल का जो उद्देश्य है वह उसे कभी पूरा नहीं कर पायेगा...

...उसके साथ ही इस दुनिया से कूच कर जायेगा भोकाल नाम का वह कीड़ा।
कालकूट के क्रोध की अधिकता से एक बार फिर कांप उठी थी धरती–

जिसने पास ही स्थित भीलों के इस कबीले में खलबली मचा दी-

उफ! पृथ्वी का यह कंपन!

पृथ्वी के इस कंपन का तात्पर्य है इस वन में मौजूद हम जैसे सैकड़ों कबीलों का विनाश!

हम पर तबाही के बादल मंडराने लगे हैं...

...क्योंकि जाग उठा है कालकूट! जागते ही उस राक्षस को चाहिए होता है ढेर सारा भोजन...

... और उसके भोजन में मुख्य होता है सैकड़ों मनुष्यों का मांस!...

... जो उसे हम भीलों के रूप में मिलेगा!...

कालकूट के प्रकोप से क्या हम बच नहीं सकते बाबा?

... कुछ ही देर में कालकूट के सेवक राक्षस पूरे जंगल में हम भीलों का शिकार करते नजर आयेंगे!

क्या कोई हमारी मदद नहीं कर सकता?

नहीं! क्योंकि कालकूट के प्रकोप के आगे देवता भी नहीं ठहर पाते! वर्षों से ऐसा ही चलता आया है! हमारे मदद करने ना कोई आया है और ना आयेगा!

जो वर्षों से नहीं हुआ था वह आज होने वाला था-

क्योंकि आज पास ही मौजूद था वह महाबली-

पाप के अवतार को समाप्त करने में निकल तो पड़ा! लेकिन मुझे अभी तक यह नहीं पता कि वह मुझे मिलेगा कहां...

... कहां होगी मेरी उससे मुठभेड़!

भोकाल के चेहरे पर नजर आने लगे दृढ़ता के भाव-

इस पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं तो मिलेगा वह। जब तक मैं उसे खोजकर समाप्त नहीं कर डालूंगा तब तक मेरी खोज जारी...

...रहेगी!

ओह!

अचानक चिहुंक उठा भोकाल-

क्यों कि नीचे उसे दिखाई दे रहा था चौंका देने वाला दृश्य-

वह भयंकर प्राणी अपनी नाक से हवा का तेज तूफान छोड़कर वृद्ध को उसमें उड़ा देने का प्रयास कर रहा है।...

...वह वृद्ध को गहरी खाई में गिराना चाहता है और वह सफल भी हो जायेगा।

अगर मैंने तुरन्त ही वृद्ध को ना बचाया तो!

अपने शिकार के हाथ से निकल जाने से उस भयंकर प्राणी का जो क्रोध भड़का-

उसे उसने तुरन्त ही भोकाल पर उगल दिया-

ओफ्फ! बड़ी तेजी से पवन उगलते हैं इसके नथुने...

आप जरा यहां रुकिये बाबा। मैं उससे निबटता हूं।
भोकाल ने वृध्द को एक सुरक्षित स्थान पर छोड़ा...
...और प्रलय दूत के सामने आ खड़ा हुआ।
अब दिखा कितनी तेजी है तुझ में?...
...और तेरे तूफान में।
यही नथूने उगल रहे हैं ना तूफान...
...ले इन्हें बंद किये देता हूं।...

... और बंद किये देता हूं तेरे जीवन को मौत की कैद में।
??
प्रहारा की मदद से उस भयंकर प्राणी को मृत्यु देकर...

... भोकाल उस वृद्ध की तरफ पलटा-
आप कौन हैं बाबा और यहां इस भयंकर प्राणी के चंगुल में कैसे आ फंसे ?
हमारा नाम पवनाचार्य है महाबली! इस वन से होकर देशाटन को निकल रहे थे कि अचानक उस भयंकर प्राणी ने हम पर आक्रमण करके हमें दबोच लिया।

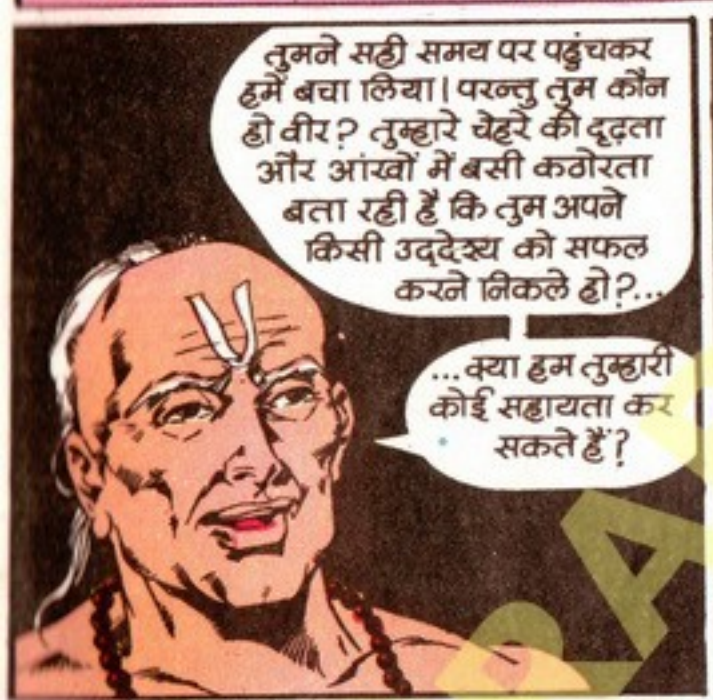
तुमने सही समय पर पहुंचकर हमें बचा लिया। परन्तु तुम कौन हो वीर? तुम्हारे चेहरे की दृढ़ता और आंखों में बसी कठोरता बता रही हैं कि तुम अपने किसी उद्देश्य को सफल करने निकले हो?...
...क्या हम तुम्हारी कोई सहायता कर सकते हैं?

मैं भोकाल हूं बाबा और मैं जिस उद्देश्य के लिए निकला हूं उसे आप जानकर क्या करेंगे?
कोई युवा वीर होता तो मैं उसे अपना उद्देश्य जरूर बताता!

भोकाल की बात पर वृद्ध के अधरों पर खेलती मुस्कान और गहरी हो गई-
सही कहा महाबली! वास्तव में हम तुम्हारा उद्देश्य जानने लायक नहीं हैं।...
...लेकिन क्या हम पर एक उपकार और करोगे...

...वो दूर नीले शिखर वाले पर्वत तक छोड़ दोगे मुझे।
वहां तो मैं आपको कुछ ही पलों में पहुंचा दूंगा आइये!
भोकाल वृद्ध को लेकर तुरन्त ही हवा में लहरा उठा-

नीचे घटती उस घटना से बेखबर जिस पर वृद्ध की पूरी नजर थी-

भोकाल उस वृद्ध को लेकर उड़ा तो सही—

परन्तु काफी देर उड़ने के पश्चात भी वृद्ध को उसके गंतव्य तक नहीं पहुंचा सका-

आश्चर्य है नीले शिखर वाले जिस पर्वत को मैं एकदम पास समझ रहा था वह दूर और दूर होता जा रहा है...

...इतनी देर उड़ते रहने के पश्चात भी वह शिखर उतना ही दूर दिख रहा है जितना पहले था।

कैसे हो रहा है ऐसा?

सवालों के भंवर में खोने की बजाये अगर भोकाल वृद्ध के चेहरे पर नाचती वह शरारती मुस्कान देख लेता तो सब कुछ पलक झपकते ही समझ जाता-

आखिर भोकाल के दिमाग ने सूंघ ही ली उस शरारत की गंध—

ओह! मैं अपने दंभ में भरा उड़ा चला जा रहा हूं और इस भ्रम-जाल को समझ नहीं पाया!

इसने अपने उड़ने की दिशा बदल कर जमीन की तरफ रुख किया-

और उसने वृद्ध को उतारकर उसके पैर थाम लिए-

महापुरुष, आप मुझे बताइये कि आप यह भ्रम फैला कर मुझे क्या शिक्षा देना चाहते हैं?

नहीं महाबली, यह मायाजाल तुम्हारे अंहकार का है। तुम्हारे दंभ का है जो तुम्हें तुम्हारी दिशा से भटका रहा है...

...बिना अनुभव के शक्ति दिशाहीन होती है। मेरे पास अनुभव है और तुम्हारे पास शक्ति। तुमने मेरी सहायता की है। इसलिए मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करना चाहता हूं।

भोकाल की आंखों में नजर आने लगा था ज्ञान का प्रकाश-

इसी बीच पास ही स्थित भीलों के एक कबीले में—

उधर से वे बड़े-बड़े पहाड़ी फल कैसे हैं जो हमारी तरफ ही लुढ़कते आ रहे हैं?

पर्वत के ऊपर इतने बड़े-बड़े फल होते हैं ये तो मैंने आज ही देखा है।
कहीं कुछ और चीज ना हो ?
सभी संशय में खड़े रहे-

और लुढ़कते हुए सभी पहाड़ी फल उनके पास आ रुके-
!!
हैरत से उन फलों को देखती प्रत्येक आंखें-

अत्यधिक भय की अधिकता से फटती चली गई-
क्योंकि उन आंखों के सामने मौजूद कांटेदार फल एक अद्भुत रूप धारण कर रहे थे--
ओह! ये फल तो राक्षसों का रूप धारण कर रहे हैं।
कालकूट के राक्षस हैं ये...

...इनसे बचो! भागो।
भागकर तुम कहीं नहीं जा सकते...

...क्योंकि तुम्हें हमारे साथ चलना है!
स्वामी कालकूट के भोजन के लिए!
थू!
थू!
थू!
राक्षसों के मुंह से निकला वह लिजलिजा पदार्थ-

दूसरे ही क्षण मकड़ी के मजबूत जालों की तरह भागने वालों से लिपटता चला गया-
आह
ओह
बचाओ
एक भी बचकर जा भाग सका-

सभी को बंदी बना चुके थे राक्षस-
हा हा हा!
हमने कहा था ना कि तुममें से एक भी बचकर नहीं भाग पायेगा!
हा हा हा
बचाओ
बचाओऽऽऽ
वातावरण बंदियों की चीखों और बंदी बनाने वालों के ठहाकों से गूंज रहा था।

तभी उन पर हावी होती चली गई वह सिंह गर्जना-
तुममें से भी कोई यहां से बचकर नहीं निकल पायेगा।

इसी स्थान को तुम्हारे लिए श्मशान बना दूंगा मैं...
...अभी यहीं तुम सब के शव पड़े नजर आयेंगे।
लेकिन तेरा तो हम यहां शव भी पड़ा नजर नहीं आने देंगे !
चीर फाड़कर खा जायेंगे हम उसे !
ओह!
सपाक
मेरी कातिल चोटी से बचकर तू कहीं नहीं भाग सकता !
भागते कायर हैं हम जैसे तो अवसर की तलाश में रहते हैं...
...और जैसे ही अवसर मिलता है हम अपना वार कर देते हैं।

... और शत्रु को फिर कोई वार करने लायक नहीं...

... छोड़ते!
आह ह
एक राक्षस से निबटने के साथ ही—

भोकाल ने औरों से अपने आपको बचाया भी—
ओफ्फ! उनके मुंह से निकला यह चिपचिपा पदार्थ अगर मेरे ऊपर पड़ जाता तो मैं हिलने-डुलने लायक भी नहीं रहता।

बहुत गंद उगलते हैं तुम्हारे थोबड़े...

... ये टूट जायें तो अच्छा है।
आह ह
आह ह

तू यहां से बचकर नहीं जा पायेगा!
बचकर तो मैं जाना भी नहीं चाहता क्योंकि अगर मैं चला गया तो...
...तुम्हें मौत कौन देगा!...
...तुम्हें नेस्तनाबूद कौन करेगा!...
...तुम्हारे लहू से यहां की धरा को लाल कौन करेगा।
क्रोध के जुनून में भोकाल राक्षसों का संहार करने में व्यस्त था...
...सब कुछ भूलकर -
पीछे से यह भारी चट्टान ठीक उसके सिर पर गिरेगी और उसकी जीवनलीला समाप्त कर देगी।
वीरों पर पीछे से प्रहार करने वाले हमें पसन्द नहीं...

... इसलिए जाओ जाकर आकाश की सैर करो।

भारी चट्टान के साथ उस भारी-भरकम राक्षस को उस वृध्द ने तिनके के समान उठाकर दूर फेंक दिया था।

अपने शत्रुओं को मौत के घाट उतारता भोकाल अगर वृध्द के इस कारनामे को देख लेता तो भौंचक्का रह जाता—

शीघ्र ही विजय हासिल करके रुके भोकाल के हाथ-

वाह! तुमने सिध्द कर दिया कि तुम वास्तव में ही महाबली हो।

धन्यवाद! बाबा!

तभी भीलों में गूंज उठा वह जय-जयकार—

देवता भोकाल की जय!

मैं देवता?

दूसरे ही क्षण सभी भील भोकाल के सामने नतमस्तक होते चले गये—

आपने महाराक्षस कालकूट से हम सबके प्राण बचाये हैं। आप हमारे देवता हैं महाबली!

महाराक्षस कालकूट! कौन है यह?

तुम्हारा लक्ष्य!

आवाक भोकाल वृध्द को देखता रह गया।

तभी वृद्ध के कंठ से गूंजा वही धीर गम्भीर स्वर-

हां महाबली! महाराक्षस कालकूट ही तुम्हारा लक्ष्य है। वह भी एक पाप का अवतार है जिनके लिए तुम्हें दिव्यास्त्र मिले हैं।

उसका संहार करके ही तुम पृथ्वी को पाप के बोझ से मुक्त करवा पाओगे।

अगर ऐसा है बाबा तो समझ लो कालकूट के दिन पूरे हो गये। भर गया उसके पाप का घड़ा...

...जल्द ही उसे काल के गाल में पहुंचाकर ही दम लूंगा मैं।

हमें तुम्हारे बाहूबल, तुम्हारी क्षमता पर संदेह नहीं है महाबली, परन्तु फिर भी हम तुम्हें इस बात से सचेत कर देना चाहते हैं कि कालकूट कोई साधारण राक्षस नहीं है...

...सैकड़ों काली और विध्वंसकारी शक्तियों का स्वामी है वह और ये सब शक्तियां उसने सैकड़ों तपस्या करके प्राप्त की हैं। लगातार तपस्या करके देवताओं को प्रसन्न करना और उनसे अपने मनचाहे वरदान प्राप्त करना ही उसका प्रमुख कार्य है...

"उन्हीं वरदानों के बल पर उसने अपने आपको एक विशालकाय पर्वत के रूप में ढाल लिया है। उसी रूप में वह अपनी सारी काली शक्तियां अपने साथ रखता है जिनकी बदौलत वह अपना कद बढ़ा भी लेता है और घटा भी लेता है।"

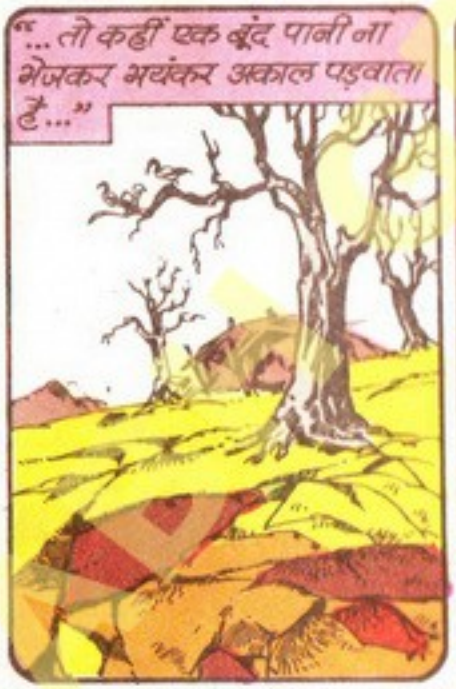

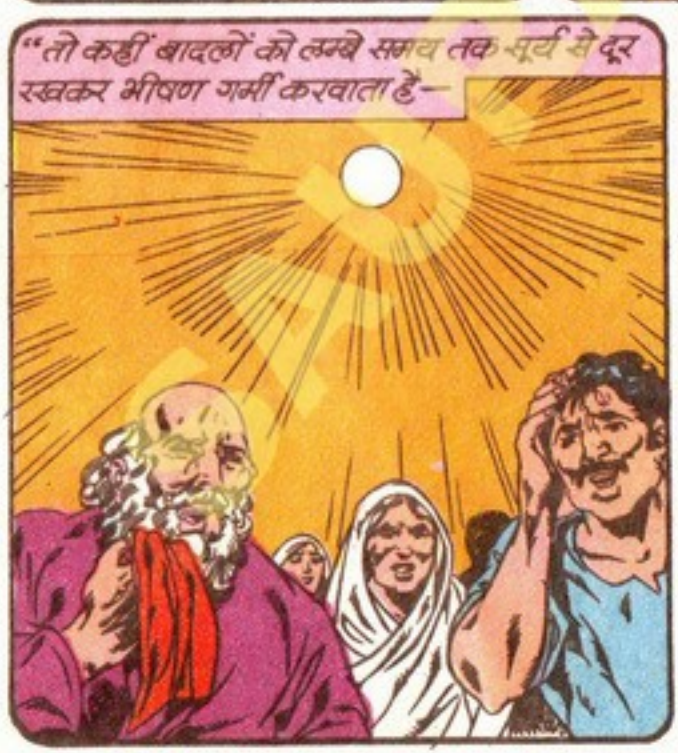

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

नहीं! उसकी शक्तियों के प्रकोप से पूरा विश्व थर्राता है। कोई भी मनुष्य उसका सामना करने का साहस नहीं कर पाता और देवता अपने द्वारा दिये गये वरदान के कारण विवश हैं।...

... वह और उसका आतंक व्याप्त है!

वृद्ध के चुप होने के साथ ही...

...भोकाल के कंठ से निकली वह गुर्राहट जिसमें थी चट्टानों को भी हिला देने की क्षमता—

उसका आतंक समाप्त होगा बाबा! चाहे उसके लिए मुझे अपने लहू की एक-एक बूंद की आहुति ही क्यों ना देनी पड़े। मेरे शरीर में प्राण रहें या जायें, लेकिन समाप्त होकर ही रहेगा...

...कालकूट—

क्या! भोकाल ने मेरे साथियों को समाप्त कर डाला।

कालकूट की काली शक्तियों को हरा दिया भोकाल ने!

इसका मतलब मैंने भोकाल की शक्ति को बहुत कम आंका है। मेरी छोटी-मोटी काली शक्तियां उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं...

...उसके लिए तो मुझे भेजना होगा अपनी उन शक्तियों को...

...जो उसे चींटी की तरह मसल दें।

एक क्षण!...मुझे अपनी शक्तियों को उस तक भेजने की कोई आवश्यकता नहीं। वह तो इधर ही बढ़ रहा है।
...अरे! इसके साथ तो एक वृद्ध भी है।

वृद्ध को देखते ही कालकूट के होंठों पर शैतानी हंसी खेल खेल गई—
कालकूट जैसी शक्ति से भोकाल लड़ने जा रहा है और अपने सहयोगी के रूप में ला रहा है एक वृद्ध को।
बहुत मूर्ख है भोकाल। भला वह वृद्ध उसे कालकूट के हाथों मिटने से कैसे बचा सकता है...

अब तो उसे समाप्त होने से वह वृद्ध क्या विश्व भर की सेना भी नहीं बचा सकती।
स्वयं तो मरेगा ही साथ ही उस वृद्ध को भी मरवायेगा।

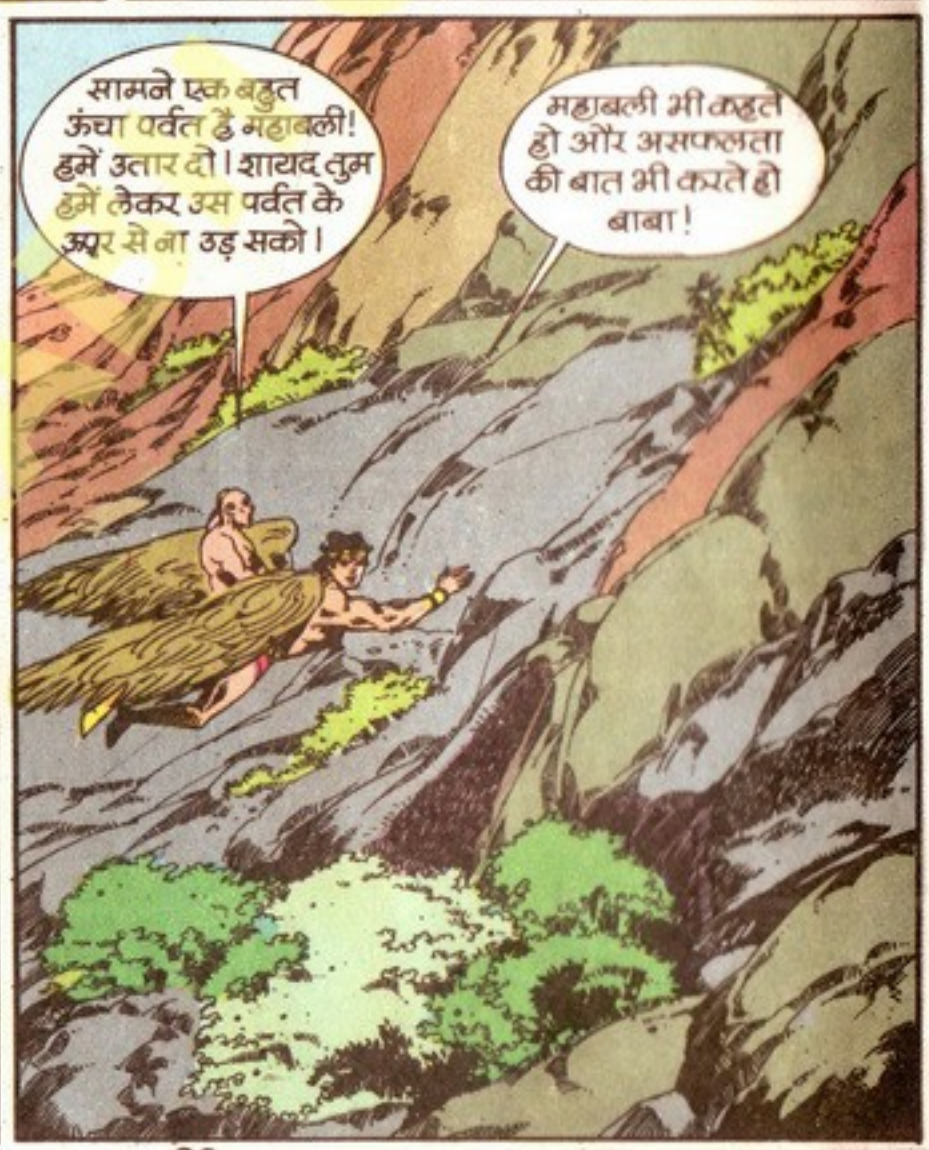
सामने एक बहुत ऊंचा पर्वत है महाबली! हमें उतार दो। शायद तुम हमें लेकर उस पर्वत के ऊपर से ना उड़ सको।
महाबली भी कहते हो और असफलता की बात भी करते हो बाबा!

आपको लेकर उस पर्वत के इस पार पहुंच-कर मैं आपको दिखा दूंगा कि भोकाल सिर्फ नाम का ही नहीं काम का भी महाबली है।
हमने तो तुम्हें आगाह किया था महाबली! आगे तुम्हारी इच्छा।
और भोकाल के चेहरे पर खेल गई परेशानी—
एकाएक तुमने अपने उड़ने की गति धीमी कैसे कर दी?...
...क्या हुआ महाबली?
कुछ नहीं!
जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि वृद्ध के भार में अचानक वृद्धि हो गई है...
दूसरे ही पल वृद्ध के अधरों पर खेल गई वह रहस्यमयी मुस्कान—

... और यह वृद्धि होती ही जा रही है।
कुछ थके हुए से प्रतीत हो रहे हो महाबली! थोड़ा विश्राम कर लो।
नहीं! विश्राम करना महाबलियों को शोभा नहीं देता! अपने लक्ष्य तक पहुंचकर ही विश्राम करते हैं महाबली!
ओफ्फ! वृद्ध का भार तो बढ़ता ही जा रहा है।
अब तो इन्हें लेकर कुछ दूर उड़ना भी दूभर लग रहा है।
तुम्हारे शरीर से बहता पसीना बता रहा है महाबली कि तुम निश्चित ही किसी संकट में हो।

महाबलियों के शरीर से बहता पसीना इस बात का द्योतक है कि अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए महाबली अपना सब कुछ दावं पर लगा देते हैं।
तुम बताओ ना बताओ, परन्तु हम समझ सकते हैं कि तुम संकट में हो महाबली!
ओफ्फ!

इसलिए मेरी मानो तो ये महाबली, महाबली जपना छोड़ो और संकटमोचन महाबली का नाम लो जो तुम्हारे इस संकट को दूर कर सके!

वृद्ध की बात में छिपे मर्म को तुरन्त ही समझ गया भोकाल –
बाबा ठीक कह रहे हैं। मुझे अपने महाबली होने का घमण्ड हो गया है। मुझे अपनी भूल सुधारनी होगी और उसके लिए मुझे पुकारना होगा उस बली का नाम जो संकट हरते हैं।

दूसरे ही पल भोकाल पुकार उठा उस बलियों के बली का नाम –
जय बजरंग बली

इसी के साथ दूर हो गये उसके सभी संकट—

अरे! चमत्कार हो गया ये तो। वीर हनुमान का नाम लेते ही आपका सारा भार समाप्त हो गया। फूल से हल्के लग रहे हैं आप...

... अब मैं आपको लेकर आसानी से उड़ सकता हूं।

भोकाल की समस्या समाप्त हो चुकी थी...

... लेकिन उसके मस्तिष्क की उलझन अभी समाप्त नहीं हुई थी—

जब से यह बाबा मिले हैं तभी से बहुत रहस्यमयी नजर आ रहे हैं। इनकी हर बात रहस्य की सैकड़ों परतों से भरी हुई है।...

...कौन हैं ये? कोई साधारण मनुष्य या कोई...

...दिव्य पुरूष!

अरे!

अचानक भोकाल की सोचों को तेज झटका लगा-

और अगले ही क्षण उसने बचा ली अपनी जान--

उफ! अगर मुझे सतर्क होने में एक क्षण की भी देरी हुई होती तो नीचे से उछाली गई यह भारी चट्टान मेरे और बाबा के विनाश का कारण बन गई होती।

ओह! यह तो नीचे से और भी चट्टानें उछाली जा रही हैं...
...और सभी का निशाना मैं हूं।
ओफ्फ
मुझे इन चट्टानों से बचने के लिए तुरन्त ही कुछ सोचना होगा क्योंकि ये चट्टानें नीचे से मेरा निशाना लेकर उछाली जाती ही रहेंगी!
अरे यह क्या? नीचे से चट्टानें तो आना बंद हो गईं। इसका मतलब मेरे कुछ करने से पहले ही अपने आप समाप्त हो गया...

संकट!
ओह! नहीं!...
किर्र
किर्र
चट्टानें तो हवा में भयंकर पक्षियों का रूप ले रही हैं।
और निसंदेह ही इन भयंकर पक्षियों का लक्ष्य हम ही हैं महाबली...
...बचो इनसे!
ओफ्फ!
बचते-बचते भी भोकाल उन दो पक्षियों की चपेट में आ ही गया—

... और वृक्ष से टूटे फल की भांति नीचे की तरफ लहरा उठा –

एक क्षण के लिए अपनी सुधबुध खो बैठा था वह –

लेकिन तभी वृद्ध की आवाज ने उसे झकझोर कर रख दिया –

महाबली! संभालो अपने आपको।

अ...हां। हां।

अपने मस्तिष्क को एक झटका देकर भीकल वास्तविकता के धरातल पर पहुंचा –

और अपनी तरफ बढ़ती उस मौत से बचा –

ओह! अगर बाबा ने मुझे ना संभाला होता तो ना जाने मेरा क्या हाल होता।

लेकिन पक्षी के जिस वार से मेरे जैसे ताकतवर के शरीर का सारा आस्तित्व हिल गया उससे बाबा के बूढ़े जर्जर शरीर को कुछ भी नहीं हुआ।

और कुछ क्षण पहले मुझे ऐसा क्यों लगा था कि मेरे गिरते शरीर को बाबा ने सम्भाला था और वे मुझे लेकर उड़ रहे थे।

कई प्रश्न घुमड़ रहे हैं मेरे मस्तिष्क में, लेकिन इस समय मुझे अपना ध्यान उनके उत्तर ढूंढने में नहीं बल्कि इन भयंकर पक्षियों के वारों से बचने...

... इनका प्रत्युत्तर देने...

... और उन्हें समाप्त करने में लगाना चाहिए!
अपने प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करने में एक बार जो शुरू हुआ भोकाल ...

... तो फिर नहीं रुका ...
... ना तब जब वह थकान से भर गया ...

... और ना तब जब उसका सारा शरीर लहूलुहान हो गया-
खच्च
खच्च
आहह

वह तो रुका तब जब समाप्त हो गये उसके प्रतिद्वंद्वी ...

... पूरी तरह—
बस बस बस। अब नहीं उड़ा जा रहा। शरीर से बह चुके अत्याधिक लहू और थकान ने मुझे बेबस कर दिया है कि ...

... मैं विश्राम करने के लिए नीचे उतरूं।

चैन की सांस लेने के लिए भोकाल नीचे उतर आया –

लेकिन वह क्या जानता था कि नीचे उसका सामना चैन से नहीं ...

... एक नई मुसीबत से होना था –

सावधान महाबली! पर्वत से लुढ़ककर बहुत सी चट्टानें हमारी ही तरफ आ रही हैं।

यह चट्टानें मात्र संयोग से ही हमारी तरफ लुढ़कती आ रही हैं या इनके रूप में आ रहा है कोई...

...संकट!

ओह!

अपनी थकान अपने लहूलुहान शरीर की चिन्ता छोड़कर एक बार फिर युद्ध के लिए तैयार हो गया वह पराक्रमी—

एक बार फिर जूझ गया वह अपने शत्रुओं को परास्त करने—

एक बार फिर जुट गया वह अपने प्रतिद्वंद्वियों को खून से नहलाने के लिए-

हा हा हा! लड़ता रह भोकाल! मेरी शक्तियों से तब तक लड़ता रह जब तक तेरी आत्मा तेरे शरीर का साथ नहीं छोड़ देती!
...तू लड़ता-लड़ता खत्म हो जायेगा...
...लेकिन मेरी काली शक्तियां खत्म नहीं होंगीं! हा हा हा!
कालकूट के शरीर से कई चट्टानें और लुढ़क गई थीं-
कई और दुश्मन भोकाल के सामने जा खड़े हुए थे—
लेकिन भोकाल लड़ता ही जा रहा था—
...लड़ता ही जा रहा था—
इनसे जूझने के लिए श्री राम का स्मरण करो महाबली!
तुरंत ही भोकाल के अधरों से निकला वह पवित्र नाम!
जय श्री राम
और इसी के साथ भोकाल के हाथ में प्रकट हो गया श्री राम का दिव्य धनुष-

अब भोकाल का हाथ बिजली की गति से पीछे तरकश तक जाता, एक तीर निकाल कर प्रत्यंचा पर चढ़ाता व कान तक प्रत्यंचा को खींचकर उसे लक्ष्य की तरफ छोड़ देता।

भोकाल की फुर्ती कम होती नहीं दिख रही थी।

और ना तरकश के तीर खत्म हो रहे थे–

प्रलय का अवतार नजर आ रहा था प्रलयंकारी धनुष के साथ भोकाल–

यही देखकर गले में ही घुटकर रह गये थे कालकूट के हलक से उबलते शब्द–

इस बार भी भोकाल के प्रति मेरा अनुमान गलत निकला। मेरी शक्तियों की तेजी से खत्म करता जा रहा है भोकाल!...

...अब अगर मुझे अपनी काली शक्तियों की खैर चाहिए तो...

...भोकाल को तुरन्त रोकना होगा!
...इस काल कंकड़ की बदौलत...
...जिसका वार कभी भी खाली नहीं जाता। किसी के सीने से टकराकर और उसे खत्म करके ही रुकता है काल कंकड़।
एक छोटे से कंकड़ से महाबली को मारना चाह रहा था वह।
किंतु वह छोटा सा काल कंकड़ अपने नाम के अनुरूप ही काल साबित होने जा रहा था।
कालकूट के शरीर से लुढ़कता कंकड़ काल का रूप धारण करने लगा।
कंकड़ पहले पत्थर बना, पत्थर बना चट्टान और चट्टान और बड़ी...
...और बड़ी हो भोकाल के विनाश का रूप धारण कर उसकी तरफ़ बढ़ी—
भोकाल को इसकी खबर भी ना थी—
खबर होती भी तो क्या करता वह बच तो फिर भी नहीं पाता...

...क्योंकि वह अभिमंत्रित चट्टान थी और टकराने के लिए उसे हर हाल में चाहिए था कोई सीना—

और वह सीना भोकाल का ही होना था

अगर विद्युत की तरह लहराकर वह वृद्ध अपना सीना आगे ना कर देता--

चट्टान भड़ाक से वृद्ध के जर्जर प्रतीत होते सीने से टकराई और--

भड़ाक

खील-खील होकर बिखर गई—

चट्टान टूटने का भीषण विस्फोट भी भोकाल को विचलित ना कर पाया—

वह तो पूरी तल्लीनता से अपने शत्रुओं को समाप्त करने में जुटा हुआ था—

लेकिन जिसे उस चमत्कार की खबर थी वह आश्चर्य के सागर में गोते लगा रहा था—

पलकें नहीं झपक रही थीं उसकी सांस तक लेना भूल गया था वह—

बड़ी से बड़ी शक्ति को समाप्त कर देने वाला काल कंकड़ उस साधारण और जर्जर वृद्ध के सीने से टकराया और चकना-चूर हो गया!...

...नहीं। जर्जर नहीं हो सकता वह जिस्म जिसने चट्टान के आघात को सहा...

साधारण नहीं हो सकता वह सीना जिससे टकराकर काल कंकड़ चकनाचूर हो गया।

मुझे पता लगाना होगा कि कौन है वज्र से शरीर का स्वामी वह वृद्ध?

सबकुछ भूलकर वृद्ध के बारे में जानने में लीन हो गया कालकूट-

जबकि इधर—

भोकाल ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के इन्द्र धनुष की मदद से अपने अंतिम शत्रु को भी पराजित करके हासिल की विजय—

लेकिन उस विजय का जश्न मनाने के लिए वह अपने पैरों पर खड़ा ना रह पाया—

अत्याधिक थकान और खून बह जाने से आई कमजोरी ने उसे बेहोश करके गिरा डाला—

लेकिन उन बूढ़े हाथों ने उसे धरा तक कहां गिरने दिया—

तुम वास्तव में महाबली हो भोकाल! तुम्हारे शौर्य, तुम्हारी वीरता और तुम्हारी इच्छा शक्ति ने...

...हमारा भी हृदय जीत लिया है!
बेहोश भोकाल को लेकर अद्भुत तरीके से वहां से अदृश्य हो गया वह वृद्ध-
ठीक वही वह समय था जब कालकूट की फटी-फटी आंखों के सामने उभरी वह आकृति--
उस वृद्ध की वास्तविक आकृति धीरे-धीरे सामने आ रही है। काली शक्तियों इसे और स्पष्ट करो।...
...पूरी तरह स्पष्ट करो इसे!
धुंधली आकृति अब पूरी तरह स्पष्ट हुई तो भक्क से उड़कर रह गया कालकूट का मस्तिष्क -
वीर हनुमान! वह वृद्ध देवता हनुमान है!
ओफ्फ! मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि काल कंकड़ को नष्ट करने वाला कोई वज्र का सीना ही हो सकता था।
लेकिन ये तो मेरे साथ छल है। मेरी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने मुझे वरदान दिया था कि कोई भी देवता, किसी भी रूप में मुझे समाप्त नहीं कर सकता। मेरे विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता...
...लेकिन ऐसा हुआ है। देवता हनुमान मुझे समाप्त करने निकल पड़ा है...

...और इसका सीधा सा तात्पर्य है कि झूठा पड़ गया है ब्रह्मा का वरदान!...
नहीं वत्स!
...छल किया है ब्रह्मा ने मुझसे!

ना हमारा वरदान झूठा पड़ा है और ना हमने तुमसे कोई छल किया है। तुम्हारे प्रति हमारा वरदान आज भी कार्य कर रहा है। अगर ऐसा ना होता तो देवताओं ने तुम्हें कभी का समाप्त कर दिया होता...

...अगर हमारा वरदान तुम्हारी रक्षा ना कर रहा होता तो पल-भर में देवताओं ने तुम्हारा और तुम्हारे पाप का अन्त कर दिया होता!
तो फिर हनुमान मेरे विरूद्ध क्यों लड़ने आया?

हनुमान तुम्हारे विरूद्ध लड़ने नहीं अपितु सत् पुरूष भोकाल की सहायता करने आये हैं। अपने भक्त की सहायता व रक्षा करना हर देवता का कर्तव्य है!...
...चिन्ता ना करो वत्स! तुम देवताओं की तरफ से पूरी तरह सुरक्षित हो।
इतना कहकर अंतर्धान हो गये ब्रह्मा।

इसी के साथ क्रोध का ज्वालामुखी बाहर आने लगा कालकूट की आंखों में--
देवताओं की तरफ से मेरा जो भय था उसे ब्रह्मा ने दूर कर दिया है।अब मुझे किसी का भय नहीं...
...रही बात भीकाल की तो हनुमान क्या सारे देवता भी उसकी मदद को आ जायें तो भी वे उसे मेरी उस शक्ति के हाथों मरने से नहीं बचा सकते...
...जिसका नाम है...
कालभुजंग!
लेकिन सैंकड़ों वर्षों से सोई कालभुजंग नामक शक्ति को जगाने के लिए हजारों नरबलियों की आवश्यकता है...
...मुझे तुरन्त उसका इन्तजाम करना होगा।
जिस भीकाल को समाप्त करने के लिए कालकूट अपनी सबसे बड़ी शक्ति को जगाने की सोच रहा था...
... वह इस समय समाप्त होने के ठीक कगार पर खड़ा था-
इसकी तो श्वास डूबती जा रही है। सारा शरीर धीरे-धीरे ठण्डा पड़ता जा रहा है।
मरने जा रहा है यह सत्पुरुष।

नहीं। नहीं। हम ऐसा नहीं होने देंगे। अपनी आंखों के सामने मरने नहीं देंगे हम अपने इस परमभक्त को।
... परन्तु हम इसे जीवित रखने के लिए करें तो क्या करें?
हे श्रीराम! बताइये अपने इस भक्त को कैसे जीवित रखकर हम इसकी भक्ति और अपनी शक्ति की लाज रखें...
... अपने भक्त को राह दिखाइये भगवन!
अपने सच्चे भक्त की पुकार भला कैसे ना सुनते श्रीराम...

... कैसे ना दिखाते उसे राह–
हां। यही कदम ठीक रहेगा!
भोकाल के प्राणों के संकट को हरने का उपाय सूझ गया था संकटमोचन हनुमान को--
तभी तो एक पल भी वहां नहीं रुके रहे वे--
इसकी देखभाल करना साथियो! हम शीघ्र ही वापस लौटते हैं।
इधर भोकाल के प्राणों को बचाने की तैयारी चल रही थी–

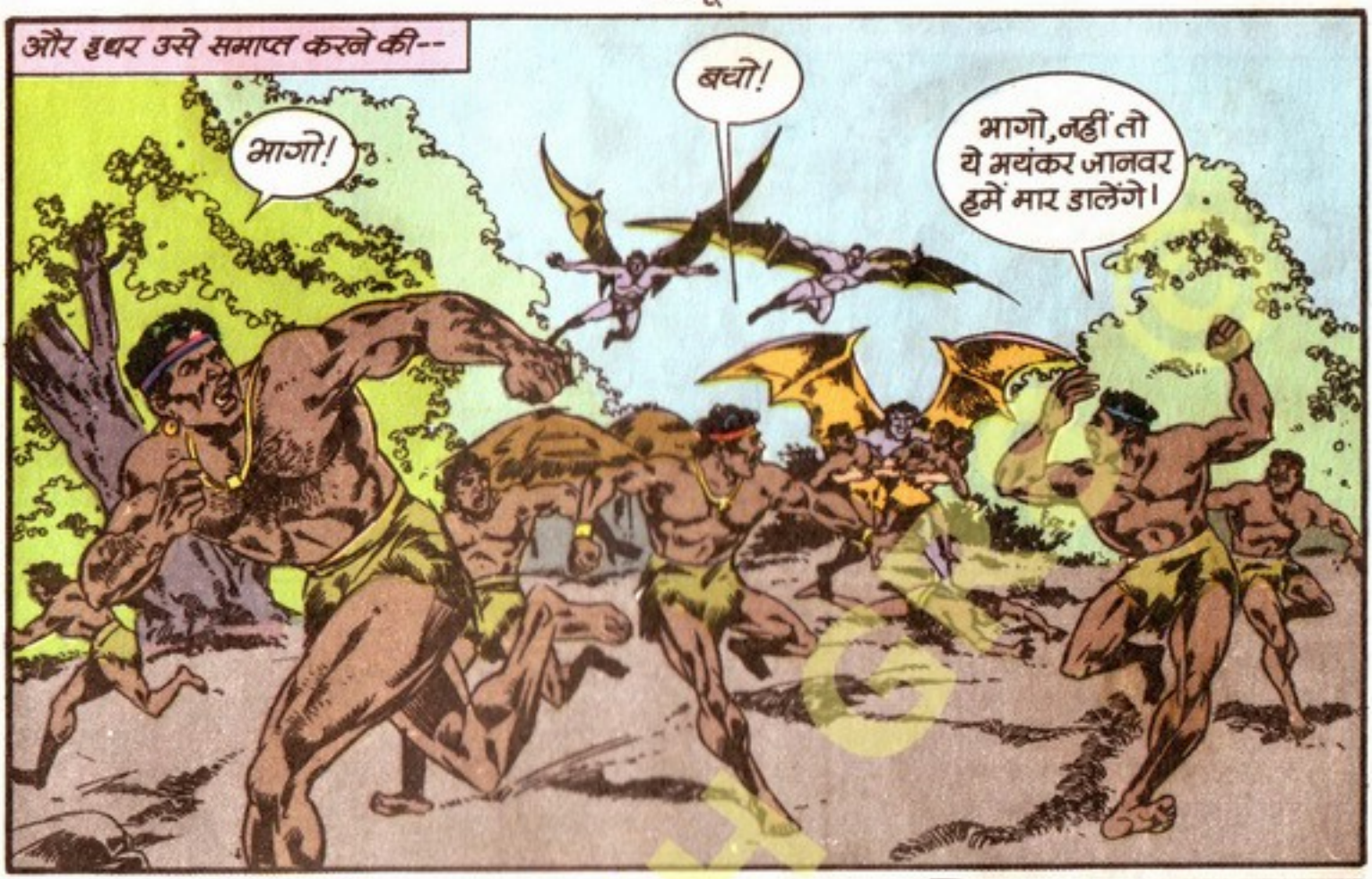
और इधर उसे समाप्त करने की--
भागो!
बचो!
भागो, नहीं तो ये भयंकर जानवर हमें मार डालेंगे।

रुक जाओ, मत भागो। ये जानवर तुम्हें नहीं मारेंगे। बाल भी बांका नहीं करेंगे ये तुम्हारा, क्योंकि ये तुम्हें मारने नहीं बल्कि तुम्हें उठाकर अपने साथ ले जाने आये हैं...

क्योंकि स्वामी कालकूट की सोई हुई शक्ति काल भुजंग जिन्दा मनुष्यों की बलि स्वीकार करती है।
हा हा हा।
त्राहि-त्राहि मची हुई थी भीलों में--

पुकार उठे वे अपने रक्षक, अपने देवता को--
हे महाबली भोकाल कहां हो तुम ? आओ। आकर बचाओ हमें।
आओ महाबली, आओ।
भीलों की उस करुण पुकार को उनका मददगार सुन लेता--

ऐसी हालत में नहीं था वह--
खी खों। खां। खां... खू खी... खौं... खी खौं.. (इसकी सांसें और धीमी हो गई हैं। हृदय की गति लगभग रुकने को है।... अब ये मनुष्य मात्र कुछ ही क्षणों का मेहमान है..)

(...महावीर हनुमान के आने से पहले ही यह स्वर्ग सिधार जायेगा।)
इसे कुछ नहीं होगा!...

...क्योंकि मृत्यु को हराने वाली इस संजीवनी औषधि को एक बार फिर लेकर आये हैं हम!

हम अभी इसे पीसकर इसका घोल इस पराक्रमी को पिलाते हैं।

एक पल बाद ही वृद्ध ने भोकाल को वह औषधि पीसकर पिला दी...

...जिसने भोकाल के हलक से नीचे जाते ही अपना प्रभाव दिखाया—

आ ह ह

मौत मात खा चुकी थी—

और भोकाल एक झटके से उठ बैठा था—

मैं तो बहुत ही बुरी दशा में अचेत हो गया था। ये मैं एकाएक ठीक कैसे हो गया...

...मेरी सारी कमजोरी दूर हो गई। मेरे सारे घाव भर गये...

...जरूर यह सब आपने किया होगा बाबा?

लेकिन कैसे... ऐसा आप कैसे कर पाये?

इस औषधि की सहायता से।

यह औषधि! अद्भुत चमत्कार है इस औषधि में।

अरे!

उस औषधि को ध्यान से देखता भोकाल अचानक बिच्छु काटे सा चौंका—

विस्मित स्वर निकला उसके मुख से--
य...यह तो संजीवनी बूटी है!...
...वही संजीवनी बूटी लक्ष्मण को जीवित करने के लिए जिसे महाबली हनुमान ऋष्यमूक पर्वत से लेकर आये थे।...
...परन्तु आप इसे कहां से ले आये बाबा?
यहां पास ही उगी हुई थी, परन्तु हमें नहीं लगता कि यह संजीवनी बूटी है।
नहीं। यह शत-प्रतिशत संजीवनी बूटी ही है। मैंने इसके चित्र सैंकड़ों बार औषधि शास्त्र की पुस्तकों में देखें हैं। इसमें एक विशेष प्रकार की चमक होती है।
हो सकता है तुम ठीक हो महाबली परन्तु हमें इसका कोई ज्ञान नहीं।
चुलबुली मुस्कान से भरे हुए थे वृद्ध के अधर, क्योंकि जीवित हो चुका था भोकाल—
जबकि इधर जाग चुकी थी भोकाल की मौत--
गड़ड़ड़
गड़ड़ड़
पूरी इक्यावन सौ मनुष्यों की बलि पाकर जागी है मेरी सबसे बड़ी शक्ति...

... कालभुजंग--
भड़ाक
हरहरऽऽऽ
बोलो स्वामी! कौन सी है वह शक्ति जिसे समाप्त करने के लिए आपको मुझे जगाने की आवश्यकता पड़ी?...
...मुझे उसका नाम बताओ स्वामी...
भोकाल!
भोकाल! समझ लो आ गया उसका कत्ल...

... शीघ्र ही भोकाल को अपना शिकार बनाकर वापस लौटेगा कालभुजंग!

भोकाल जैसे मानवता के रक्षक को तलाश करने के लिए मुझे कहीं जाने की जरूरत नहीं...

... इस तरीके से वह अपने आप चलकर मेरे पास आयेगा!
कालभुजंग की विष फुंफकार नदी के सारे पानी को विषाक्त करती चली गई-

कोई नहीं जान पाया कि जीवन देने वाला जल जीवन लेने वाला बन गया था...

... लेकिन ज्यादा देर तक छिपी नहीं रही यह बात--
नदी का विषाक्त जल पीने से हमारे पड़ोसी कबीले के सभी लोग मर गये सरदार!
ओह! नहीं।

विषाक्त जल ने हमारे कबीले के भी बीस व्यक्तियों की जान ले ली है।
एक के बाद एक लगातार कई मुसीबतें हम पर टूट पड़ी हैं।
विषाक्त पानी का कहर सिर्फ कबीलेवासियों पर ही नहीं...

...उनके मवेशियों पर भी टूटा--

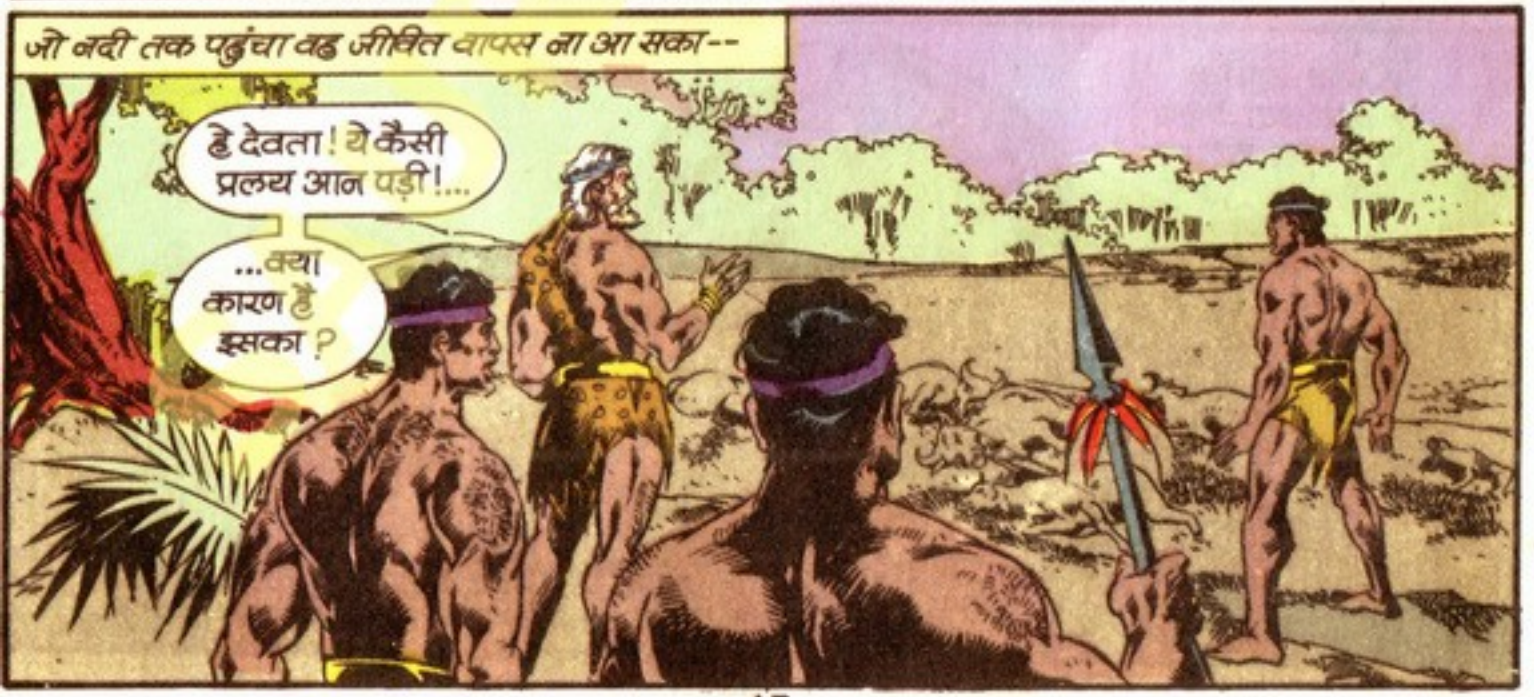
जो नदी तक पहुंचा वह जीवित वापस ना आ सका--
हे देवता! ये कैसी प्रलय आन पड़ी!...
...क्या कारण है इसका?

कारण शीघ्र ही सामने आया--
हर्रा हर्रऽऽऽऽ
हे देवता! इतना भयंकर अजदहा! कहीं यह प्रलय इसी की वजह से तो नहीं आई है।
हां, मेरी वजह से आई है यह प्रलय...
...और अगर जल्द ही भोकाल मुझ तक नहीं पहुंचा तो...
...यह प्रलय इस जंगल के एक-एक भील को निगल जायेगी।
आहह
आह
हर्रर्र
भील जाति का नाम सदा के लिए मिटा देगी!
भोकाल के लिए मची इस प्रलय से—

ज्यादा देर तक अनभिज्ञ ना रह सका भोकाल—

ओफ्फ! ऐसी भयानक तबाही ऐसा भीषण नरसंहार...

...सिर्फ मेरे लिए। ओफ्फ!

आंखों के साथ दिल भी रो पड़ा था भोकाल का वह सब देखकर--

क्रोध का भूकम्प नजर आने लगा था उसके चेहरे पर--

इस धरती पर गिरी निर्दोष लहू की एक-एक बूंद की सौगंध भोक्तल अब तब तक अन्नजल ग्रहण नहीं करेगा जब तक उसके हाथों समाप्त नहीं हो जाता...

...कालभुजंग--

हा हा हा! कालभुजंग नाम की इस प्रलय से तुम्हें मात्र एक ही मनुष्य बचा सकता है! भोकाल!...

...सिर्फ भोकाल!
बचाओSSS
सही कहा इन्होंने मैं ही बचा सकता हूं।
!!
लेकिन तू बता, तुझे भोकाल के कहर से कौन बचा पायेगा?
अच्छा हुआ तू आ गया भोकाल! भीलों को तो मैं ऐसे ही निगल रहा था! वास्तविकता तो यह है कि मेरे पेट की भूख...
...सिर्फ तुझे निगलने के बाद ही शान्त होगी!

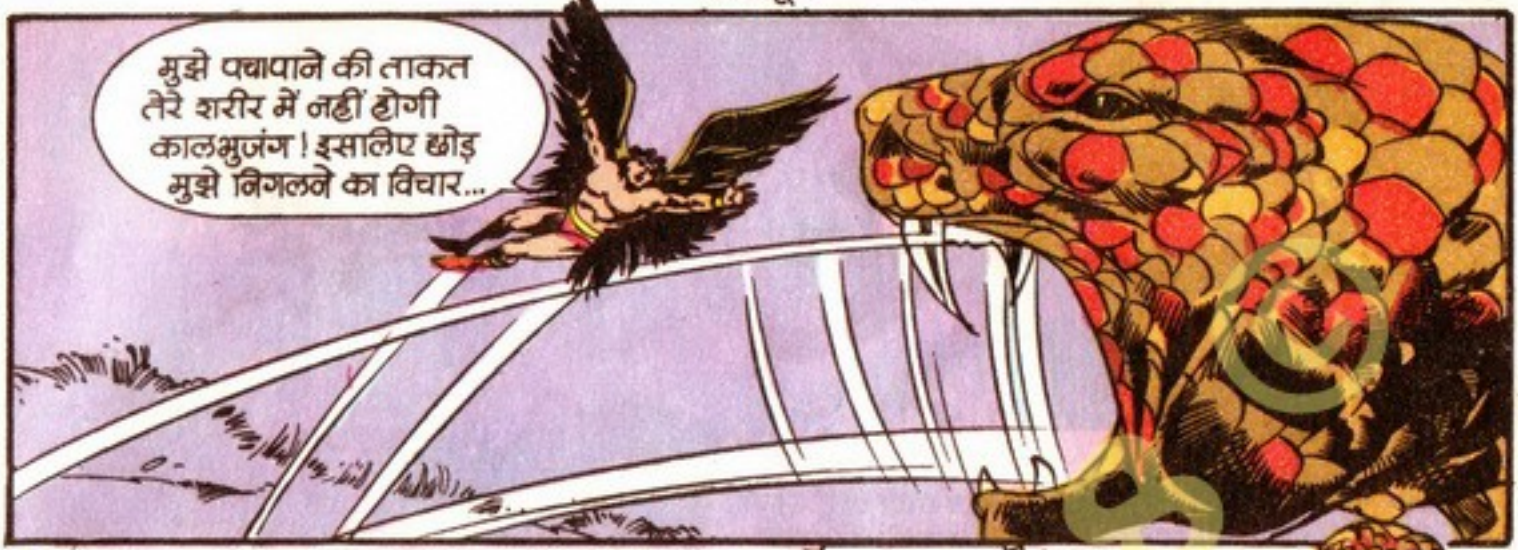
मुझे पचापाने की ताकत तेरे शरीर में नहीं होगी कालभुजंग! इसलिए छोड़ मुझे निगलने का विचार...

... इन घातक अस्त्रों को निगल!
जिन्हें तू घातक अस्त्र कह रहा है मूनगे वे मोम के खिलौने हैं...

... मेरी विषफुंकार वे आगे।
ओह!

ऐसे ही मैं तेरा शरीर भी गलाऊंगा और फिर उसे पानी की तरह पी जाऊंगा।
सही समय पर उड़कर इसकी घातक विषफुंकार से बचा मैं।

उड़कर तू खूब बचा लेकिन बचा नहीं रहेगा क्योंकि उड़ने की कला कालभुजंग भी जानता है।
सामने से मैं प्रहारा का जो भी वार इस पर कर रहा हूं उसे यह अपने विषफुंकार से गलाए दे रहा है। इसलिए अब मुझे अपना अगला प्रहार चालाकी से करना होगा...
प्रहारा से एक हथियार इसके लिए छोड़ना होगा ताकि यह उसे खत्म कर सके...
और फिर बिना कोई क्षण गंवाये दूसरा हथियार छोड़ना होगा जो कालभुजंग को खत्म कर सके।
ओह! इतने घातक हथियार से इसका बाल भी बांका नहीं हुआ।
हा हा हा! कालभुजंग के शरीर पर खरोंच भी डाल दे ऐसा हथियार इस पृथ्वी पर नहीं बना...

...और ना ही पैदा हुआ कालभुजंग की शक्तियों का सामना करने वाला कोई मनुष्य।

सड़ाक

आश्चर्यजनक ढंग से बढ़कर कालभुजंग की पूंछ सड़ाक से भोकाल से टकराई।

बेहद भीषण था वह प्रहार—

जिसके प्रभाव से लहराता हुआ भोकाल धड़ाम से नीचे आ गिरा --

भड़ाक

एक क्षण के लिए भोकाल की आंखें अंधेरे में डूबकर रह गईं--

और वही क्षण भोकाल की जिन्दगी को अंधेरे में डुबोने वाला साबित हुआ—

हर्र्र्र्र्र्र

बेसुध सा भोकाल कालभुजंग की सांसों के साथ खिंचता हुआ—

...उसके उदर में जा पहुंचा--

ओफ्फ!

स्थिति को समझने का प्रयत्न करते भोकाल को कालभुजंग की गूंजती आवाज ने चौंकाया--
बस भोकाल! तू मेरे उदर में पहुंच गया है। अब अपने जीवन की यात्रा को समाप्त समझ! अब तेरा जीवन सिर्फ कुछ क्षणों का और शेष है...
अपनी सांसों के साथ मैं तुझे अपने शरीर में मौजूद उस विषकुण्ड में डालने जा रहा हूं... जिसमें गिरते ही तू और तेरे साथ सारे दिव्यास्त्र सदा के लिए समाप्त होकर रह जायेंगे।
कर अपने विधाता को याद भोकाल, क्योंकि तू अब विनाश की तरफ बढ़ रहा है।
ओह! सांसों की तेजी और इसके शरीर में मौजूद फिसलन मुझे खड़ा नहीं होने दे रही...
...अब मैं उस विषकुंड में गिरकर नष्ट होकर ही रहूंगा।
विनाश ठीक सामने था--

ऐसे में भी भोकाल ने अपनी बुद्धि के बल पर बचने का एक उपाय ढूंढ ही लिया--

विषकुण्ड से पहले सामने उसका हृदय है। अगर मैं किसी तरह इसके हृदय को नष्ट करने में सफल हो जाऊं तो उसके हृदय का संबंध उसके बाकी शरीर से टूट जायेगा और...

...उसकी जीवन लीला समाप्त हो जायेगी।

ओह! प्रहारा से निकले इतने घातक हथियार का हृदय की शिराओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा...

शिराओं को काटने का भोकाल का प्रयत्न--

एक बार फिर असफल हुआ--

ओफ्फ! बाहर के शरीर की तरह काल-भुजंग का अंदर का शरीर भी बेहद कठोर है।...

...इस पर भी प्रहारा के किसी भी वार का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा।

...ओफ्फ! अपने हर प्रयास के साथ मैं अपनी जिन्दगी बचाने में भी विफल हो रहा हूं।

और मुझे समाप्त करने में सफल होती जा रही है कालकूट की यह शक्ति...

और अगर मैं समाप्त हो गया तो सारे ब्रह्माण्ड को अपने कदमों तले रौंद डालेगा कालकूट-नामक पाप का अवतार।

नहीं ऐसा नहीं होगा। जब तक पाप का वह अवतार समाप्त नहीं हो जाता मैं स्वयं को समाप्त नहीं होने दूंगा और अब मैं स्वयं को बचाने के लिए इस्तेमाल करूंगा...

मां काली की खड्ग!
काली की खड्ग का स्मरण करते ही...
...भोकाल के आसपास अदृश्य रूप में मौजूद दिव्यास्त्रों में से काली की खड्ग तुरन्त ही भोकाल के हाथ में प्रकट हुई--
मृत्यु से कुछ ही हाथ दूर भोकाल के काली की खड्ग का प्रयोग करने में एक क्षण भी नहीं लगाया--
तीनों लोक की शक्तियों को काट देने की शक्ति रखने वाली काली की खड्ग ने पलक झपकते ही कालभुजंग के दिल की शिराओं को काट डाला--
जिसका परिणाम शीघ्र ही सामने आया--
मैं रुक गया! इसका मतलब कालभुजंग की सांसें रुक गयीं!
काली मां की खड्ग के प्रताप ने कालभुजंग को समाप्त कर दिया है...
खड्ग का यही प्रताप काल भुजंग के इस मृत शरीर को खत्म करके...

...मुझे यहां से बाहर निकालेगा!
बहुत अच्छे महाबली! तुमने सही समय पर दिव्यास्त्र का प्रयोग कर इस शैतान का अंत किया!
कालभुजंग के समाप्त होने के साथ खुशी की जो चमक तुम्हारे चेहरे पर आई है...
... उसे कालकूट मौत के मातम में बदल देगा।
कालकूट! लगता है तुम्हारी सारी काली शक्तियां समाप्त हो गई कालकूट। जो तुमने स्वयं ही महाबली से लड़ने की ठान ली है।
मेरी काली शक्तियों के समाप्त होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु अब...
...मैं इस आंख-मिचौनी को समाप्त कर देना चाहता हूं...
...भोकाल नाम के इस कीड़े को अपने हाथों से समाप्त करके।
ओफ्फ! अगर मैं सतर्क ना होता तो कालकूट के विशाल हाथ ने मेरा कचूमर निकाल दिया होता।
मृत्यु तेरा भाग्य बन चुकी है भोकाल!

... तू आज किसी भी तरह नहीं बच पायेगा।

जा पाताल में जाकर मर।

भड़ाम

कालकूट के विशाल हाथ के प्रहार ने इस बार फाड़ दिया धरा का सीना-

जिसमें गिरता चला गया भोकाल-

हा हा हा। समाप्त हुआ भोकाल का जीवन। पाताल में जाने कहां जाकर गिरेगी उसकी लाश।

हमारे होते भोकाल को कुछ नहीं हो सकता दुष्ट!

दूसरे ही क्षण वृद्ध के कपड़ों से बाहर बजर आई वह लम्बी पूंछ--

... तूफान की तेजी से बढ़ी--

क्षण भर में ही भोकाल तक पहुंची...

और उसे मौत के मुंह से बाहर ले आई--

तुम्हारी कोई भी मदद आज इसके भाग्य में लिखी मृत्यु को नहीं टाल सकती!

यह महाबली है दुष्ट कालकूट! इसका बाहुबल तुम्हारे शरीर और घमण्ड को चूर-चूर करके ही रहेगा।

सम्भलो महाबली!

मैं तो खाई में गिर गया था फिर बाहर कैसे आया मैं?

इधर भोकाल सम्भला—

और इधर अपनी अद्भुत शक्तियों की बदौलत कालकूट ने धरा यह रूप--

इसके बाहुबल पर बहुत घमण्ड है तुझे। देखें कालकूट के सामने कब तक ठहर पाते हैं इसके बाहु...

...और बल।

झटक

काल आया है तेरा जो तू भोकाल का बल आजमाने निकला है।

काल मेरा नहीं तेरा आया है मूर्ख मनुष्य!

मेरे हाथों तेरा काल निश्चित है...
ओह!
धमाक

भोकाल!
कालकूट की गदा के धरती से टकराते ही मानो हिल गया धरा का अस्तित्व-

इस बार वे तो मानों प्रलय ही ला दी-
गड़ गड़

इसी के साथ वृद्ध के कंठ से गूंजी वह आवाज-
इससे बचने का नहीं उसका सामना करने का प्रयत्न करो महाबली, क्योंकि जैसे ही इसकी प्रलयंकारी गदा धरा से टकराती है वैसे ही पृथ्वी के किसी कोने पर प्रलय आ जाती है... लाखों मनुष्य मर जाते हैं।
अब तो मुझे इसकी गदा का मुकाबला करना ही होगा और उसके लिए एकदम उपयुक्त रहेगी...

... बजरंग बली की गदा।

स्मरण करते ही भोकाल के हाथों में प्रकट हुए राक्षसों का संहार करने वाली वह गदा-

...जिसे लेकर भोकाल झपट पड़ा कालकूट की तरफ-

करोड़ों शैतानों का नाश करने वाली इस गदा का शिकार बनेगा तू।

गदा का वार तभी जोरदार हो सकता है जब उसे संभालने वाला जमकर अपने पैरों पर खड़ा रहे...

लेकिन तुझे तो मैं एक पल भी जमकर खड़ा नहीं होने दूंगा।

ओफ्फ!

जमीन में हुई उस भयंकर कंपन से लड़खड़ाया भोकाल—

लेकिन तुरन्त ही हवा में लहराकर संभला—

ओफ्फ! हवा में लहराकर ही इससे बचा जा सकता है, लेकिन मुझे नीचे उतरना होगा। ताकि धरा से टकराते उसके वार को रोककर उसके वारों से मचने वाली प्रलय...

... रोक सकूं।

भड़ाम

... और वीर हनुमान की इस गदा से उसकी गदा को नष्ट करके...

भड़ाक

... उसे बेहाल...
आहहं
भड़ाक

... और फिर समाप्त कर सकूं।
भड़ाक
गदा की कालकूट के शरीर से टक्कर और कालकूट की अन्तिम चीख मानों समस्त पृथ्वी पर जलजला लाती चली गई-

बड़ा भयानक अंत हुआ था कालकूट का राक्षस के विशाल ढेर में बदल गया था उसका मजबूत शरीर-

और इसका साथ देने आता था दिव्यास्त्रधारक श्रेष्ठ मनुष्य भोकाल को -
तुम्हारे अदम्य साहस को कोटिश प्रणाम महाबली!
धन्य है पृथ्वी जिस को भोकाल, तुम जैसा वीर, साहसी और बुद्धिमान मनुष्य मिला।
समाप्त